अंक : 18 | जनवरी-दिसंबर 2024 ISSN : 2231-6191

जन विकल्प

18

स्त्री कहानी

विशेषांक

विकल्प तृशूर

अंक : 18 | जनवरी-दिसंबर 2024 ISSN : 2231-6191

जन विकल्प

पीयर रिव्यूड पत्रिका

स्त्री कहानी

विशेषांक

प्रबन्ध संपादक
डॉ. के.एम. जयकृष्णन

संपादक
डॉ. पी. रवि

सह संपादक
डॉ. बी. विजयकुमार
डॉ. निम्मी ए.ए.

सलाहकार समिति
रवि भूषण (रांची)
विनोद शाही (जालंधर)
वि. कृष्णा (हैदराबाद)
देवेन्द्र चौबे (नई दिल्ली)
विनोद तिवारी (नई दिल्ली)

विकल्प तृशूर

संपादन सहयोग

डॉ. के.जी. प्रभाकरन　　डॉ. वी.जी. गोपालकृष्णन
डॉ. ए. सिन्धु　　डॉ. रश्मि कृष्णन

पीयर रिव्यू टीम

डॉ. के.के. वेलायुधन, प्रोफेसर (Rtd), करुकुट्टी, एरणाकुलम, केरल।
डॉ. बजरंग बिहारी तिवारी, प्रोफेसर, देशबंधु कॉलेज, दिल्ली वि.वि. दिल्ली।
डॉ. प्रज्ञा, प्रोफेसर, किरोड़ी मल कॉलेज, दिल्ली वि.वि., दिल्ली।
डॉ. उमा शंकर चौधरी, स्वामी श्रद्धानंद कॉलेज, दिल्ली वि.वि., दिल्ली।
डॉ. प्रोमिला, एसोसिएट प्रोफेसर, EFLU, हैदराबाद, तेलंगाना।
डॉ. महेश एस., एसिस्टेंट प्रोफेसर, कालिकट वि.वि., मलप्पुरम, केरल।

आवरण, टाईप सेटिंग एवं लेऔट

FORBIZ, www.forbiz.in

कार्यालय संपर्क

VIKALP BHAVAN
Puthurkkara, Ayyanthole P.O., Thrissur-680 003, Kerala.
Phone: +91-8547568534, 94463 58534
Email: vikalpthrisur@gmail.com
Website: www.vikalpthrisur.org

संपादकीय संपर्क

P. Ravi, 'Parayil'
URA-119, Unichira, Changampuzha Nagar P.O.,
Ernakulam, Kerala-682 033
Phone: +91-9446269365
Email: 456raviparayil@gmail.com

सहयोग राशि

यह अंक : **रु. १८०/-**
चार अंक : **रु. ६००/-**

संपादन एवं संचालन पूर्णतया अवैतनिक और अव्यावसायिक।
पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं।
संपादक एवं संपादक मंडल की सहमति अनिवार्य नहीं है।
समस्त विवाद तृशूर न्यायालय के अन्तर्गत विचारणीय।

संपादक की ओर से

स्त्री कहानी असल में स्त्रियों की कथा है। साथ ही अपने चारों ओर की दुनिया को स्त्री की नजर से देखने-महसूस करने का अनुभव भी स्त्री कहानी में जगह लेती है। इस विशाल अनुभव क्षेत्र में संघर्ष का स्वर अधिक है, क्योंकि स्त्री को अपनी जगह बनाने की सख्त ज़रूरत थी। पुरुष के लिए परिवार में, समाज में, राजनीति में या अन्य क्षेत्रों में स्थान बनाने का संघर्ष बिरले ही हुआ है। हर क्षेत्र में पुरुष की प्रभुता थी और आज भी है, इसलिए उसके लिए अस्मिता संघर्ष की नौबत आती नहीं। कहीं जाति, धर्म, अर्थ के आधार पर पुरुष की भी उपेक्षा हुई है, वह स्त्री के संघर्ष के आगे कम महत्व रखता है। उसे परिवार में संघर्ष का सवाल ही नहीं उठता है। इस तरह की प्रभुता साहित्य के क्षेत्र में भी एक सच्चाई है। इसलिए महिला लेखन अलग ढंग से विवेचन-विश्लेषण की मांग करता है।

नवनीता देव सेन बंगला की महिला लेखक समिति (शोई) की अध्यक्षा कहती हैं कि 'हम इसे ऐसे कह सकते हैं कि लेखन के इस क्षेत्र में हम महिला लेखिकाओं का अपनी कहानी दर्शाने का एक अपना अलग अंदाज़ है। मुझे लगता है इसके लिए हमें एक अलग और समर्पित मंच की ज़रूरत थी, इसी कारणवश बंगाल में कुछ समरुचिकार लेखिकाओं ने मिल के सन २००० में शोई की शुरुवात की। कई महान लेखिकाएं जैसे कि सुचित्रा भट्टाचार्य, मैगसेसे पुरस्कार विजेता महाश्वेता देवी, प्रख्यात नृत्यांगना अमला शंकर इस मंच के साथ शुरू से जुड़ी रही' लेखिकाओं केलिए लिंग के आधार पर संगठित होने को विभिन्न क्षेत्रों में व्याप्त पुरुष वर्चस्व ने मजबूर किया। बंगला लेखिकाओं ने मात्र नहीं हिंदी समेत समस्त भारतीय तथा विश्व की समस्त भाषाओं की लेखिकाएं भी एकत्रित हुई हैं। यह सिर्फ लेखिकाओं की प्रतिष्ठा व अस्मिता केलिए नहीं समस्त स्त्रियों की अस्मिता तथा परिवार एवं समाज के विभिन्न क्षेत्रों में स्त्री की अपनी जगह के लिए भी है।

आरंभ में स्त्री शिक्षा, स्त्री जागरण, विधवा विवाह तथा आर्थिक आत्मनिर्भरता को लेकर जो स्वतंत्र चेतना जाग उठने लगी वह धीरे-धीरे सशक्त होने लगी और परिवार एवं समाज में मुखर होने लगी। इसका क्रमिक विकास महिला कहानी के विकास पर नजर डालने पर दिखाई देता है। उषादेवी मित्रा, कमला चौधरी, सत्यवती मल्लिक, सुभद्रा कुमारी चौहान आदि से लेकर एकदम नई लेखिकाओं की कहानियों में दिखाई देती है।

स्त्री कहानी लेखन के उद्‌भव एवं विकास को रेखांकित करने तथा सभी लेखिकाओं (यहां युवा लेखिकाओं को छोड़ दिया गया है क्योंकि उनकी रचनायात्रा का मूल्यांकन अपूर्ण रह जाएगा) की कहानियों का विवेचन-विश्लेषण प्रस्तुत करना इस विशेषांक का उद्देश्य है। इस प्रयास में सौ प्रतिशत सफल तो नहीं हुआ, फिर भी यह अपने ढ़ंग का प्रथम प्रयास है।

डॉ. पी. रवि

अनुक्रम

1. बीसवीं सदी की हिंदी कहानी का स्त्री अध्याय
   अर्चना वर्मा 7
2. उषा देवी मित्रा की कहानियों में नारी चिंतन
   अजय कुमार तिवारी 21
3. सुभद्रा कुमारी चौहान की कहानियों में आधुनिक-चेतना
   भीमसिंह 29
4. चन्द्रकिरण सोनरेक्सा की कहानी
   शुभा श्रीवास्तव 35
5. शशिप्रभा शास्त्री की कहानियों में नारी-संवेदना लोक
   नीरज कुमार द्विवेदी 39
6. हिंदी कहानी का 'शिवानी' पक्ष
   राहुल शर्मा 46
7. कृष्णा सोबती की कहानी
   षेमिनास टी. एस. 55
8. उषा प्रियंवदा की कहानियां और आधुनिक परिवेश
   हुसैनी बोहरा 62
9. मन्नू भंडारी की कहानियों में परम्परा और आधुनिकता बोध
   रवि रंजन 78
10. सहज कहानी की परम्पराः मालती जोशी
    शशि मुदीराज 93
11. जिंदगी के पाले में
    रश्मि रावत 105
12. स्त्री जीवन का दस्तावेजःमंजुल भगत की कहानी
    मेरी हांसदा 112
13. चंद्रकांता के 'अब्बू ने कहा था' कहानी संग्रह में मानवीय संवेदना
    मुमताज परवीन 118
14. मृदुला गर्ग की कहानियों में वैविध्यता
    काजू कुमारी साव 124
15. दीपक कुमार की कहानियों में मां
    बीरपाल सिंह यादव 147
16. कुसुम अंसल की कहानी
    इंदु के.वी. 153

17. समानता, सामूहिकता और सह-अस्तित्व की कहानियाँ
श्रीलेखा के. एन. 158
18. साधारण की असाधारण कहानीकारः ममता कालिया
संयोगिता वर्मा 167
19. सीमांत का आख्यानः चित्रा मुदगल की कहानियाँ
प्रोमिला 175
20. मेहरुन्निसा परवेज़ की कहानियों में संघर्ष, संवेदना और सामाजिक यथार्थ
शहला के.पी. 185
21. टूटे हुए इंद्रधनुषी सपनों की अधूरी कहानियाँः नमिता सिंह की कथा-दृष्टि
आशीष कुमार तिवारी 193
22. उषा किरण खान की कहानियाँ
आतिश कुमार विश्वकर्मा 198
23. एक जादू की दृष्टिकथाः अर्चना वर्मा की कहानियाँ
रश्मि कृष्णन 213
24. स्त्री सरोकारों की रचनाकारः सुधा अरोड़ा
सुप्रिया पी. 220
25. मनुष्य के जीवन में उम्मीद की किरणः नासिरा शर्मा
नीलाभ कुमार 232
26. क्षमा शर्माः स्त्री की दृष्टि से बालमन का विश्लेषण
ध्रुव कुमार 240
27. आमजन के जीवन के विविध पहलुओं की पड़ताल करती सारा राय की कहानियाँ
प्रीति सिंह 246
28. सच्ची-मुच्ची कहानियाँ
निशान्त 254
29. जीवंत सच्चाई से रचनात्मक संघर्ष की अनुगूंज
लीना सामुवल 262
30. अलका सरावगी की कहानियों में चित्रित स्त्री छवि
प्रीति सागर 270

१

बीसवीं सदी की हिंदी कहानी का स्त्री अध्याय

अर्चना वर्मा

स्त्री का योगदान अगर शेष जीवन की तरह साहित्य सृजन में भी हाशिए पर ही रहता आया है तो इसका मूल कारण वह जिंदगी तो है जो हमने और हमारे समाज ने स्त्री को दी, हमारे वे मूल्यांकन के औजार भी हैं जिन्हें हम निर्वैयक्तिक तरीके से स्त्री के लेखन पर लागू करते समय यह सोचते भी नहीं कि एक सर्वथा भिन्न जिंदगी से एक भिन्न मानसिकता उपजती और भिन्न अभिव्यक्ति में फलती है। स्वयं स्त्री ने भी इन कसौटियों को कुछ इस तरह से आत्मसात कर लिया है कि अपने आपे के लिए संकुचित और क्षमाप्रार्थी-सी नजर आती है। यह तो इसी सदी की बात है कि पहली बार इक्का-दुक्का अपवादों को छोड़कर समवेत में स्त्री का स्वर कम से कम दर्ज तो हुआ।

इस स्वर का आकलन बताता है कि स्त्री के लेखन और उसकी जिंदगी के यथार्थ के बीच का फासला न्यूनतम है - लगभग अनुपस्थित! अक्सर उतना भी नहीं जितना कलात्मक संयम के नाम से लेखन के नुस्खों में जरूरी बताया गया है। इसीलिए उसका साहित्य उसकी जिंदगी, उसके समाज और दोनों के बदलावों और जड़ताओं का दस्तावेज हुआ करता है। आरोप है - जाहिर है, पुरुष आलोचक का - कि स्त्री का लेखन और तदनुसार स्त्रैण लेखन भी अतिरंजना, रूमान, पीड़ा के महिमामण्डन और अश्रुबहुल भावुक हाहाकार की अभिव्यक्ति मात्र है जिसका विवेक, कलात्मक संयम, रचनात्मक अनुशासन और रूप के गठन से खास कुछ लेना देना नहीं। इन्हें अगर कसौटी मान लिया जाए तो कुछ अपवादों के अतिरिक्त बात कमोबेश सच है। जिन सामाजिक पारिवारिक दबावों के सांचे ने स्त्री के जीवन को ढाला उन्होंने उसे एक विकल्पहीन परिस्थिति के साथ बांध भी दिया, धर्म और शास्त्र की मुहर लगा दी ऊपर से, और संस्कृति के रूप में भी उन्हें ही प्रतिष्ठित कर दिया सो अलग। कथा क्षेत्र में वे विषय आज निष्कासित से हो चुके हैं, जो आज भी बड़े पैमाने पर उसके जीवन का सामाजिक सत्य हैं और जिनके द्वारा उसका अस्तित्व एक बोझ के रूप में परिभाषित होता है। दहेज, पर्दा, अशिक्षा, वैधव्य के अभिशाप, आर्थिक निर्भरता, पराधीनता उस समाज से उठ चुके हैं जो साहित्य में चित्रित किया जाता है क्योंकि बार-बार कहे जाने से भी बातों की